Class - 9

शब्दालंकार के भेद:—

शब्दालंकार के ~~मुख्य~~ मुख्यत: तीन भेद है:- अनुप्रास, यमक, श्लेष।

अनुप्रास अलंकार:— जहाँ पर एक वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे (1) तरनि तनूजा, तट तमाल तरूवर बहु छाये।

(2) चारु चंद्र की चंचल किरणे खेल रही है जल थल में।

इन दोनो पंक्तियों में क्रमश: त और च वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है।

यमक अलंकार:— जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो, परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते है, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे:—

(i) कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
पा खाये बौराय जग, वा पाये बौराय॥

(ii) तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।

यहा पर पहले कनक शब्द का अर्थ धतूरा, और दूसरे कनक का अर्थ सोना है।

श्लेष अलंकार:— श्लेष का अर्थ है 'चिपका हुआ'। जब पंक्ति में एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते है, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे -

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस चून॥

(यहाँ पानी शब्द के तीन अर्थ — चमक, प्रतिष्ठा और जल है)

गृह कार्य:— अलंकार की परिभाषा, एवं भेद याद करे।

अलंकार

जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा शरीर की शोभा में वृद्धि होती है उसी प्रकार शब्दगत और अर्थगत चमत्कार के द्वारा काव्य की शोभा में वृद्धि होती है। अर्थात् जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है।

अलंकार की परिभाषा :—

अलंकार की परिभाषा अनेक आचार्यों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

1. आचार्य भामह के अनुसार, "अलंकरोति इति अलंकार:" अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।
2. आचार्य दण्डी के अनुसार "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।" अर्थात् काव्य की शोभा बढाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।

अलंकार के भेद :—

अलंकार मुख्यत: दो भागों विभाजित है- 1- शब्दालंकार 2- अर्थालंकार
अलंकार का एक तीसरा भी भेद होता है - उभयालंकार

शब्दालंकार :— जहाँ केवल शब्दों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे:—
"सेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै।"

अर्थालंकार :— जहाँ केवल अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे:—
'नील कमल-सी मुख-प्रभा, सरस सुधा-से बोल'।

S.J.N. Public School Class - 9

Sub - Hindi

प्रकरण - अलंकार

अध्यापक - श्याम सिंह
मो० नं० 9026647288

अलंकार

जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा शरीर की शोभा में वृद्धि होती है उसी प्रकार शब्दगत और अर्थगत चमत्कार के द्वारा काव्य की शोभा में वृद्धि होती है। अर्थात् जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है।

अलंकार की परिभाषा :-

अलंकार की परिभाषा अनेक आचार्यों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

① आचार्य भामह के अनुसार, "अलंकरोति इति अलंकार:" अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।

② आचार्य दण्डी के अनुसार, "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।" अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते है।

अलंकार के भेद :-

अलंकार मुख्यत: दो भागों विभाजित है- 1 - शब्दालंकार 2 - अर्थालंकार
अलंकार का एक तीसरा भी भेद होता है - उभयालंकार

शब्दालंकार :- जहाँ केवल शब्दों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे :-
"सेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै।"

अर्थालंकार :- जहाँ केवल अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार होता है! जैसे :-
'नील कमल-सी मुख-प्रभा, सरस सुधा-से बोल'।

Class - 9

:- शब्दालंकार के भेद :-

शब्दालंकार के ~~मुख्य~~ मुख्यत: तीन भेद हैं :- अनुप्रास, यमक, श्लेष।

अनुप्रास अलंकार :- जहाँ पर एक वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे (1) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

(2) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।

इन दोनो पंक्तियों में क्रमश: त और च वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है।

यमक अलंकार :- जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो, परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे :-

(i) कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग, वा पाये बौराय॥

(ii) तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।

यहा पर पहले कनक शब्द का अर्थ धतूरा, और दूसरे कनक का अर्थ सोना है।

श्लेष अलंकार :- श्लेष का अर्थ है 'चिपका हुआ'। जब पंक्ति में एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे -

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस चून॥

(यहाँ पानी शब्द के तीन अर्थ - चमक, प्रतिष्ठा और जल है)

गृहकार्य :- अलंकार की परिभाषा, एवं भेद याद करे।

S.J.N. Public School Class 9
Sub - Hindi
प्रकरण - अलंकार
अध्यापक - श्याम सिंह
मो०नं० 9026647288

अलंकार

जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा शरीर की शोभा में वृद्धि होती है उसी प्रकार शब्दगत और अर्थगत चमत्कार के द्वारा काव्य की शोभा में वृद्धि होती है। अर्थात् जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है।

अलंकार की परिभाषा :-

अलंकार की परिभाषा अनेक आचार्यों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

(1) आचार्य भामह के अनुसार, "अलंकरोति इति अलंकार।" अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।

(2) आचार्य दण्डी के अनुसार, "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।" अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।

अलंकार के भेद :-

अलंकार मुख्यत: दो भागों विभाजित है- 1- शब्दालंकार 2- अर्थालंकार
अलंकार का एक तीसरा भी भेद होता है - उभयालंकार

शब्दालंकार :- जहाँ केवल शब्दों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे :-
"सेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं।"

अर्थालंकार ! - जहाँ केवल अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे :-
'नील कमल-सी मुख-प्रभा, सरस सुधा-से बोल'।

=> विभाव => जो व्यक्ति, वस्तु, परिस्थितियाँ आदि स्थायी भाव को जागरित या उद्दीप्त करती हैं, उन्हे विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं। (i) आलम्बन (ii) उद्दीपन

(i) आलम्बन विभाव :- स्थायी भाव जिन व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का अवलम्ब लेकर अपने को प्रकट करते हैं, उन्हे आलम्बन विभाव कहते हैं। इसके दो भेद हैं! — (i) आश्रय (ii) विषय

(i) आश्रय :- जिस व्यक्ति के मन में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

(ii) विषय => जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण आश्रय के चित्त में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे विषय कहते हैं।

(2) उद्दीपन विभाव => भाव को उद्दीप्त अथवा तीव्र करने वाली वस्तुएँ, चेष्टाएँ आदि को उद्दीपन विभाव कहते हैं।

=> अनुभाव => अनुभाव शब्द का अर्थ है, 'अनुभव करना'। मनोगत भावों को व्यक्त करने वाले भाव को अनुभाव कहते हैं। अनुभाव चार प्रकार के माने गए हैं।

(i) कायिक अनुभाव (ii) मानसिक अनुभाव

(iii) सात्विक अनुभाव (iv) आहार्य अनुभाव

=> संचारी भाव => आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 33 मानी गयी है।

=> श्रृंगार रस को 'रसराज' या रसो का राजा कहा जाता है।

गृह कार्य => रस की परिभाषा, स्थायी भाव एव इसके अंगो को परिभाषित ढग से याद करे।

2020.05.12 07:17